विशिष्ट व्यक्तित्व
Prominent Personalities

कांजीवरम श्रीरंगाचारी शेषाद्री

Seshadri, C.S.

(29 फरवरी 1932 – 17 जुलाई 2020)

कांजीवरम श्रीरंगाचारी शेषाद्री एक भारतीय गणितज्ञ थे। इनका जन्म एक हिन्दू ब्राह्मण परिवार में 29 फरवरी 1932 को कांचीपुरम (तमिलनाडु) में हुआ था। इन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से वर्ष 1953 में गणित में बी. ए. (ऑनर्स) किया। इन्होंने वर्ष 1958 में के. एस. चन्द्रशेखरण के निर्देशन में बंबई विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। वह, वर्ष 1953 में बतौर शोध छात्र टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (Tata Institute of Fundamental Research (TIFR)) से सम्बद्ध हुए। टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR) में उनकी यह यात्रा वर्ष 1984 तक वरिष्ठ प्रोफेसर बनने तक रही। वह वर्ष 1971 में भारतीय विज्ञान अकादमी के फ़ेलो चुने गए। वर्ष 1984 से 1989 तक उन्होनें इंस्टिट्यूट ऑफ मैथमैटिकल साइन्सेज, चेन्नई (Institute of Mathematical Sciences, Chennai (IMS)) में कार्य किया। वर्ष 1989 से 2010 तक वह इंस्टिट्यूट ऑफ मैथमैटिकल साइन्सेज, चेन्नई के संस्थापक निदेशक रहे। वर्ष 2020 में उनकी मृत्यु होने तक वह निदेशक – एमरिटस की भूमिका में इसी संस्थान से जुड़े रहे। उनका कार्य मुख्यतः बीजीय ज्यामिति में रहा है। शेषाद्री स्थिरांक का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है। उनका शोध कार्य मुख्यतः बीजीय ज्यामिति में रहा है। एम. एस. नरसिम्हन के साथ नरसिम्हन– शेषाद्री प्रमेय के लिए भी उन्हें जाना जाता है जो रीमान पृष्ठ पर स्थाई सदिश बंडलों के लिए आवश्यक स्थितियों को सिद्ध करता है। इनके ज्यामितीय–निश्चर सिद्धांत, सूबर्ट वेरायटीज विशेष रूप से एकपदी सिद्धांत की प्रस्तुति की व्यापक प्रशंसा रही है। वह विदेशों में पेरिस विश्वविद्यालय, फ्रांस; हारवर्ड विश्वविद्यालय कैम्ब्रिज, बौन्न विश्वविद्यालय व क्योटो विश्वविद्यालय आदि में आगंतुक प्रोफेसर की भूमिका में भी रहे है। शेषाद्री को कई सम्मान एवं पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं जिनमें कुछ निम्न हैः–

भारत का पद्म–भूषण सम्मान,

शांति स्वरुप भटनागर पुरस्कार,

भारतीय विज्ञान अकादमी द्वारा प्रदत्त श्रीनिवास रामानुजन पदक,

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा मानद D. Sc. की उपाधि,

Université Pierre et Marie Curie से मानद उपाधि इत्यादि।

उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें निम्न है :–

1. Introduction to the Theory of Standard Monomials (2/E). Hindustan Book Agency, Delhi (2007).
2. Studies in the History of Indian Mathematics. Hindustan Book Agency, Delhi (2010).
3. Collected Papers of C. S. Sheshadri. Volume 1. Vector Bundles and Invariant Theory. Hindustan Book Agency, Delhi (2012).
4. Collected Papers of C. S. Sheshadri. Volume 2. Schubert Geometry and Representation Theory. Hindustan Book Agency, Delhi (2012).

बैबेज, चार्ल्स

Babbage, Charles

(26 दिसम्बर 1971 – 18 अक्टूबर 1871)

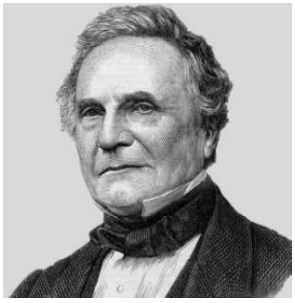

चार्ल्स बैबेज एक अंग्रेज गणितज्ञ, यांत्रिक अभियंता और दार्शनिक थे। बैबेज वर्तमान में प्रचलित सबसे अच्छे कंप्यूटर प्रोग्राम की अवधारणा के लिए प्रणेता के रूप में जाने जाते हैं। गणितीय तालिकाओं की यांत्रिक गणना करने का विचार सर्वप्रथम बैबेज को वर्ष 1812 या 1813 में आया था। इसके बाद में उन्होंनें आठ दशमलव तक गणनाएं कर सकने वाला कैलकुलेटर बनाया। इन्होंने ही सर्वप्रथम यांत्रिक अभिकलित्र की रूपरेखा तैयार की तथा उसका निर्माण भी किया। बैबेज और उनके कुछ मित्रों जान हर्सल, जॉर्ज मयूर आदि ने वर्ष 1812 में एक विश्लेषणात्मक संस्था का गठन किया था। वर्ष 1816 में उन्हें लन्दन की रॉयल सोसाइटी का फेलो चुना गया। रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल (1820) तथा स्टैटिस्टिकल सोसाइटी (1834) की स्थापना में उनकी महती भूमिका थी। बैबेज ने अपने भतीजे हेनरी द्वारा शून्य (Cipher) पर एक चुनौती के रूप में पेश किये गए कार्य पर बिजलेख का आविष्कार किया जो कि वर्ण संकेतीकरण तालिका पर आधारित है।

सन्दर्भ

1. Smith, D.E. (1958). History of Mathematics. Vol. I, Dover Publications, Inc, New York.
2. Smith, D.E. (1958). History of Mathematics. Vol. II, Dover Publications, Inc, New York.